मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2018-20 /R.N.I. No. 66400/97

ताली, थाली और मदारी	3
सरकार कब लॉकडाउन होगी	4
'दिमाग़ी लॉकडाउन' के ख़तरे	5
राष्ट्रवादी अलगाव के ख़तरे	6
पोस्ट-करोना हिंदुस्तान	8

वर्ष 33 अंक 20 फ़रीदाबाद 29-4 अप्रैल 2020 फोन -8851091460 ₹2.50

बेशक कितने भी मर जायें पर कोरोना के नाम से नहीं

फ़रीदाबाद (म.मो.) कोरोना वायरस से लड़ने के नाम पर लम्बा लॉक-डाउन चल पड़ा है ताकि संक्रमण द्वारा बीमारी के फ़ैलाव को रोका जा सके। ठीक है इस से संक्रमण तो नहीं ही होगा बीमारी भी नहीं फ़ैलेगी लेकिन केवल लॉक-डाउन से ही जो लोग मर जायेंगे वे कौन से खाते में जायेंगे? जाहिर है कम से कम कोरोना के खाते में तो नहीं ही जायेंगे।

स्थानीय मेडिकल कॉलेज अस्पताल की ओपीडी जो 3000 की थी अब मात्र 500 की रह गयी है यानी जहां रोजाना 3000 मरीज़ इलाज के लिये आते थे अब मात्र 500 रह गये हैं। क्या शेष 2500 लोग 100-200 रुपये भाड़ा खर्च करके अस्पताल में घूमने आते थे जो अब बंद हो गये? अथवा वे लोग लॉक-डाउन होने के बाद एकदम स्वस्थ हों गये? नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता, उन्हें अस्पताल आने से रोका जा रहा है। कुछ तो पब्लिक ट्रांस्पोर्ट की उपलब्धता न होने से और ऊपर से पुलिस की सख्ती से मरीज़ अस्पताल तक नहीं पहुंच पा रहे हैं।

शहर के सबसे बड़े सरकारी बीके अस्पताल ने तो अपनी ओपीडी बंद ही कर दी है। अब वहां केवल खांसी-जुकाम वाले उन मरीज़ों को देखने का उपक्रम किया जाता है जिन्हें कोरोना संक्रमित होने का भय लग रहा हो। ऐसे मरीज़ों को देख कर भी डॉक्टर कुछ विशेष करने की स्थिति में नहीं होते। वैसे भी खांसी-जुकाम के लिये कोई दवा दी जाती भी नहीं। हां किसी पर संदेह कुछ ज्यादा हो तो उसका 'कफ़' सेंपल लेकर ट्रैस्टिंग के लिये रोहतक या गोहाना के मेडिकल कॉलेज में भेज दिया जाता है क्योंकि यहां तो कोई टैस्टिंग सुविधा भी नहीं है। इन मरीज़ों के अलावा महिलाओं की डिलिवरी आदि का काम भी चल रहा है, बाकी के मरीज़ भगवान राम के भरोसे।

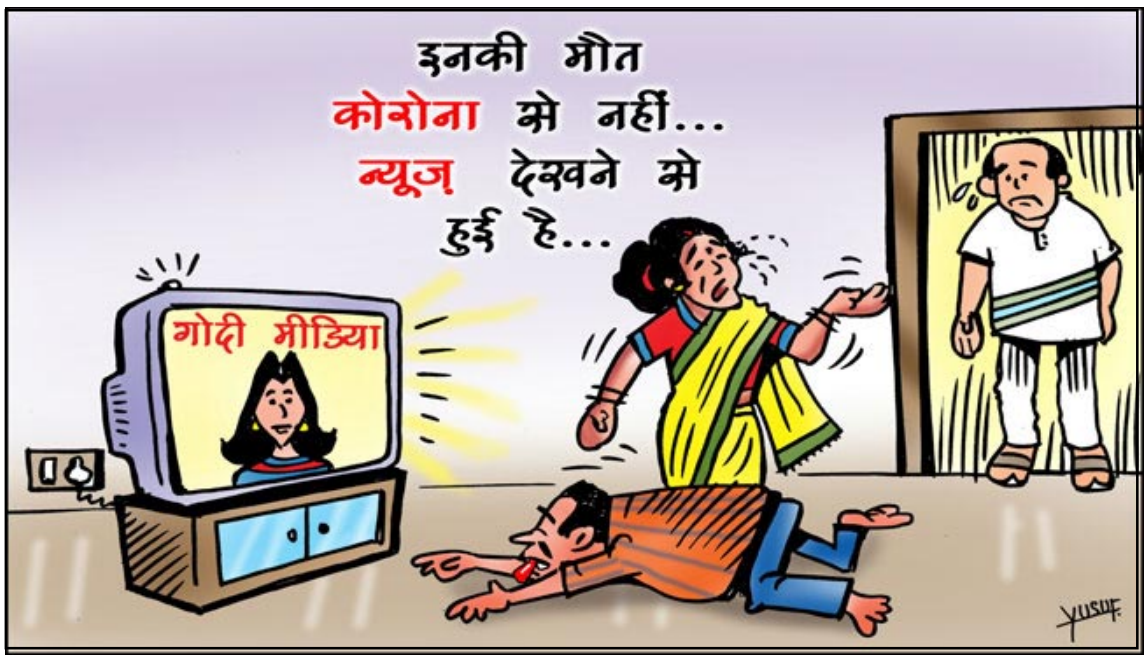

दिल्ली के एम्स व सफ़दरजंग जैसे बड़े अस्पतालों में जहां कई हज़ार मरीज़ दूर-दूर से ओपीडी में आते थे पूर्णतया बंद कर दिया गया है। दरअसल वहां के गलियारों में मरीज़ों की इतनी जबरदस्त भीड़ रहती थी कि आते-जाते मरीज़ों के आपस में कंधे टकराते थे। जाहिर है ऐसे में संक्रमण फ़ैलने का खतरा बहुत अधिक रहता है। इस खतरे को दूर करने के लिये अथवा भीड़ घटाने के लिये नये अस्पतालों की व्यवस्था करने की बजाय दो वर्ष पूर्व 'आयुष्मान भारत' का ड्रामा रचा गया और ओपीडी ही बंद कर दी।

लचर चिकित्सा व्यवस्था के अलावा लॉक-डाउन के दौरान जो ग़रीब रोज़ कमा कर खाते थे वे क्या खायेंगे? लाखों रिक्शा, रेहड़ी झल्ली वाले नाई, मोची पल्लेदार व कुली आदि कहां से खायेंगे? दूर-दराज के गांवों को लौटना चाहें तो कोई साधन नहीं छोड़ा उनके लिये। सैंकड़ों मील के सफ़र पर बाल बच्चों के साथ पैदल ही निकल पड़े, सब राम लला के भरोसे। रास्ते में दूध का कोई खाली टेंकर मिल गया तो 10-20 लोग उसी में जैसे-तैसे समा जाते हैं। यात्रा सरल करने के चक्कर में जान का जोखिम तक उठाना पड़ता है। कुल मिलाकर इलाज के अभाव में, भूख से व अन्य सुविधाओं के अभाव में लोग बेशक कितने ही मर जायें, परन्तु सरकार 56 इन्च का सीना ठोक कर तो कह ही सकती है कि कोरोना से लोग़ों को नहीं मरने दिया।

कोरोना के नाम पर ईएसआईसी अस्पताल के 100 बेड आरक्षित

केन्द्र में राज्य सरकार ने कभी भी चिकित्सा सेवाओं पर लफ़्फ़ाज़ी से आगे बढकर कोई ठोस काम करने की जरूरत नहीं समझी। कोरोना का संकट आया तो ईएसआईसी के एनएच-तीन स्थित उस मेडिकल कॉलेज अस्पताल से 100 बेड एक झटके में सरकार ने उन मज़दूरों से छीन लिये जिनके खून-पसीने की कमाई से यह संस्थान केवल उन्हीं मज़दूरों के लिये बनाया गया था जिनके वेतन से प्रति माह ईएसआईसी साढे चार प्रतिशत (जो गत वर्ष तक साढे छः प्रतिशत था) वसूलता है।

इस अस्पताल की दसवीं मंजिल पर बने 100 बेड के सर्जिकल वार्ड को पूरी तरह से खाली करा लिया गया है। विदित है कि 510 बेड के इस अस्पताल में सदैव 600 से 650 मरीज़ दाखिल रहते हैं। इस स्थिति को देखते हुए करीब 250 बेड बढाने

शेष पेज दो पर

कोरोना से लड़ाई
खट्टर सरकार का कारनामा

कोरोना के हू हल्ले में चुपके से सीएम हरियाणा मनोहर लाल खट्टर व सभी मंत्रियों ने अपना आवास भत्ता Rs. 50,000 से बढ़ा कर Rs. 1,00000/-कर लिया है !

जबकिं कोरोना से लड़ने के लिए हस्पतालों में ज़रूरी सुविधाएं, लैब, वेंटिलेटर, आईसीयू नहीं हैं,इस सरकार के पास पैसा नहीं है। लॉक डाउन में लाखों दिहाड़ी मज़दूरों, गरीबों को देने को कुछ नहीं है। जोर से बोलो भारत माता की! गौ माता की ! वंदे...

- पी पी कपूर

मजदूर मोर्चा खबर का असर : 'नरक द्वार' की मरम्मत शुरू

फ़रीदाबाद (म.मो.) सेक्टर 28 में शाही एक्सपोर्ट्स कंपनी के नरकद्वार बनने की खबर मजदूर मोर्चा ने पिछले अंक में छापी थी। जिसमें फरीदाबाद नगर निगम द्वारा इस मामले में लापरवाही भरा रवैया अपनाने और कोई कार्रवाई न करने की बात बताई गई थी। इस खबर का असर यह हुआ कि अब नगर निगम और शाही एक्सपोर्ट्स दोनों ही मिलकर सड़क के अंडरग्राउंड नाले को ठीक करने में जुट गए हैं। मौके पर हो रहा काम बताता है कि नई सीवरलाइन डालकर पानी का फ्लो ठीक किया जाएगा।

हालांकि कोरोना वायरस फैलने की वजह से अभी मरम्मत का काम बंद पड़ा है। ध्यान रहे कि शाही एक्सपोर्ट्स की लापरवाही की वजह से कंपनी में कपड़ों की डाइंग का पूरा पानी सड़कों पर ओवरफ्लो होकर बहता है। इस वजह से यह पूरी सड़क खराब हो गई है। इसके अलावा सेक्टर 28 हाउसिंग बोर्ड में भी लोगों के घरों में इसका प्रदूषित पानी बैक मारता है। उम्मीद है कि कोरोना से छुटकारे के बाद शाही एक्सपोर्ट्स और नगर निगम मिलकर इसका स्थायी हल निकाल लेंगे।

कोरोना से लड़ाई
हमारी मांग

मजदूर मोर्चा देशभर के कोरोना के संकट से ग्रस्त मजदूरों किसानों की तरफ से मांग करता है कि :-

1. **अपने घरों को पैदल जा रहे गरीब मजूदरों के लिए तुरन्त फ्री वाहन उपलब्ध करवाये जायें उनके लिये रास्ते में रहने व खाने पीने का प्रबंध किया जाये।**
2. **लॉकडाउन की अवधि में सभी का मुफ्त इलाज किया जाये। इसके लिए जरूरी हो तो सारे प्राईवेट अस्पतालों व लैब आदि को सरकार तुरन्त अपने कब्जे में ले।**